केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# प्रभा

## VIDYALAYA PATRIKA 2024

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-१

सेक्टर-30, गांधीनगर

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA No. 1, SECTOR-30, GANDHINAGAR

# मुख्य संरक्षक

**श्रीमती श्रुति भार्गव**

उपायुक्त

के.वि.सं.(अहमदाबाद संभाग)

**श्रीमान मेहुल के. दवे** (आई.ए.एस.)

क्लेक्टर एवं जिला अधिकारी

एवं

अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति

# संरक्षक

**श्रीमान वेंकटेश्वर प्रसाद बी.**

सहायक आयुक्त

के.वि.सं.(अहमदाबाद संभाग)

**श्रीमती मीना जोशी**

सहायक आयुक्त

के.वि.सं.(अहमदाबाद संभाग)

**श्री आलोक कुमार तिवारी**

प्राचार्य

पीएम श्री के. वि. क्र.1 सेक्टर 30, गांधीनगर

**श्री व्योमेश रावल**

उप- प्राचार्य

पीएम श्री के. वि. क्र.1 सेक्टर 30, गांधीनगर

**श्रीमान एल. जे. वाघेला**

प्रधानाध्यापक

पीएम श्री के. वि. क्र.1 सेक्टर 30, गांधीनगर

## संपादक मंडली

डॉ. विजय कुमार साव
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी

श्रीमती ध्वनिका भट्ट
स्नातकोत्तर शिक्षिका, अंग्रेजी

श्रीमती प्रतिभा त्रिवेदी,
प्र. स्ना. शि. हिंदी

श्रीमान प्रकाश कुमार प्रजापति
प्र. स्ना. शि. अंग्रेजी

श्रीमान नवीन अमीन,
प्र. स्ना. कला शिक्षक

श्रीमान जे. जे. वाघेला
प्राथमिक शिक्षक

श्रीमती पूनम यादव,
प्राथमिक शिक्षक

## छात्र संपादकीय बोर्ड

तिथि वाघेला XI B

हरप्रीत कौर XI C

जाह्नवी XI C

सत्यम XI B

श्रुति भार्गव
Shruti Bhargava
उपायुक्त/Deputy Commissioner

केंद्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
अहमदाबाद संभाग/Ahmedabad Region
Sector-30, Gandhinagar (Guj) - 382030

फा.12029/संदेश/2024/केविसं /क्षेका/अ'बाद

दिनांक : 21.08.2024

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि केंद्रीय विद्यालय, न.1 सेक्टर-30 गाँधीनगर सत्र 2023-24 के लिए विद्यालय पत्रिका **'प्रभा'** के नए अंक का प्रकाशन कर रहा है।

विद्यालय पत्रिका विद्यालय की वर्ष-भर की रचनात्मक एवं सह-शैक्षिणक गतिविधियों की जानकारी सभी हितधारकों तक पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम है। साथ ही विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों एवं स्टाफ के सदस्यों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सबसे प्रभावशाली मंच है। विद्यालय में शिक्षण के लिए नियमित रूप से होने वाली गतिविधियों के अलावा कुछ ऐसा होना भी जरूरी है जो विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति न केवल रुचि जगाए, बल्कि उनमें ऐसे कौशल भी विकसित करे जो उनके भावी जीवन में काम आएँ। पत्रिका के अनवरत प्रकाशन से विद्यार्थियों अपने कौशल को प्रदर्शित करने का निरंतर अवसर मिलता रहता है। मुझे विश्वास है कि आपकी विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा और कौशल को उजागर करने का उचित अवसर प्रदान करेगी।

मैं, विद्यालय पत्रिका के नवीनतम संस्करण को सफल बनाने के लिए विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों, स्टाफ एवं विद्यार्थियों द्वारा सृजनात्मक और रचनात्मक योगदान देने एवं प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान के लिए उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ और उनका अभिनंदन करती हूँ।

(श्रुति भार्गव)

श्री आलोक कुमार तिवारी
प्राचार्य,
केंद्रीय विद्यालय नं.1,
सेक्टर-30, गाँधीनगर

E-mail: dcroahmedabad@gmail.com
Tel: 079-232-61360/60361/60711

**PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO. 1**
SECTOR 30, GANDHINAGAR

# संदेश

**सृजन की शक्ति, होती है विध्वंस से बड़ी**
**आशा और उम्मीदों से भरी |**
**शक्ति का नवरूप देकर, उसे उपयोगी बनाती |**
**कल्पना को पर देकर, नव चेतना जगाती |**
**सृष्टि के निर्माण में, सृष्टि के विकास में,**
**अपनी अहम भूमिका निभाती |**

सृजन-कार्य सचमुच एक उपासना है । सृजन आशाओं, उम्मीदों एवं कल्पनाओं से परिपूरित एक ऐसा कार्य है, जो आज के इस यांत्रिक एवं भौतिकवादी युग में अपार शक्ति एवं संभावनाओं को संजोये हुए हैं । बाल-सुलभ मन की कल्पनाशक्ति एवं रचनात्मक क्षमता की बात ही निराली है, अद्भुत है । विद्यालय परिवार द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन बालक मन की सृजन-शक्ति, एवं क्षमता का अन्यतम उदाहरण प्रस्तुत करता है । पत्रिका में छात्र-छात्राओं ने साहित्य की विविध विधाओं ( कविता, कहानी, आलेख, नाटक हास्य-व्यंग्य उक्तियाँ, पेंटिंग आदि ) के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं व कल्पनाओं को शब्द-बद्ध करने का भरसक प्रयास किया है, जो सराहनीय है । उनके विचार निश्चय ही एक बेहतर समाज की संरचना में अहम भूमिका का निर्वाह करेंगे । मैं सभी तरुण रचनाकारों को साहित्य सृजन हेतु बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ ।

विद्यालय पत्रिका का उद्देश्य बस इतना ही है। यह पत्रिका विद्यालय की गतिविधियों को प्रदर्शित करने के अलावा विद्यालय के लेखकों का आत्मविश्वास भी बढ़ाएगी। इसलिए, मुझे वास्तव में उम्मीद है कि सभी माता-पिता और अन्य हितधारक पत्रिका को पढ़ेंगे और अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया देंगे ताकि हम और सुधार कर सकें।

हमारे संरक्षक, श्रद्धेय उपायुक्त महोदया श्रीमती श्रुति भार्गव, माननीय श्री वेंकटेश्वर प्रसाद बी.सहायक आयुक्त, माननीया श्रीमती मीना जोशी सहायक आयुक्त को उनके निरंतर मार्गदर्शन और निर्देशन हेतु मैं धन्यवाद देता हूँ ।

श्रीमान व्योमेश रावल, उप-प्राचार्य, डॉ. विजय कुमार साव, पीजीटी (हिंदी) और मुख्य संपादक, श्री नवीन अमीन, टीजीटी(कला शिक्षण) को भी धन्यवाद देता हूं और बधाई देता हूँ, जिन्होंने पत्रिका को डिजाइन किया इसके साथ ही सभी छात्र-संपादकों और अन्य सभी जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया ।

सधन्यवाद I

**आलोक कुमार तिवारी**
प्राचार्य

# संपादकीय

**हे माली सुकुमार मत तू जान मुझे...**
**इन छोटी-छोटी कलियों से**
**कल में एक फूल बनूँ।**
**इस अनंत बगिया का एक द्रुत बनूँ।**

इन पंक्तियों के माध्यम से मैं उन तरुण रचनाकारों का अभिनंदन करना चाहूँगा, जिनकी रचनाएं छोटे कलेवर में एक कोमल कली स्वरूप विद्यालय पत्रिका के बगिया में प्रस्फुटित हुई हैं। जो आगे चलकर एक फूल बन अपनी प्रतिभा व सृजनात्मकता से कोमल भावनाओं व प्रगतिशील विचारों की सुगंधी से पूरे वाङ्मय को सुवासित करेंगे।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्र. 1, गांधीनगर वह बगिया है, जहां पर विचारों के बीज कल्पनाओं का आश्रय पा कली के रूप में प्रस्फुटित होती है। हमारी यह विद्यालय पत्रिका भी रंग-विरंगी कल्पनाओं, भावनाओं व विचारों के फूलों से आच्छादित है। छात्र-छात्राओं ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के विविध रूप अपनाएं। कविता, आलेख, लघु नाटक, एवं चित्रकला आदि विधाएँ पत्रिका में अवलोकनीय है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए छात्र-छात्राओं ने काफी उत्साह व जोश दर्शाया एवं वृहत् संख्या में हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी की रचनाएं मिलीं। रचनाओं के चयन में मौलिकता, प्रासंगिकता, ज्ञान, सूचना को विशेष ध्यान में रखा गया। पत्रिका के संपादन से लेकर प्रकाशन तक विद्यालय के अविभावक तुल्य प्राचार्य श्री आलोक कुमार तिवारी जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ और यह पत्रिका अपना यह स्वरूप ग्रहण कर पायी। मैं पूरे संपादक मंडली की ओर से उनका हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। सहयोगी संपादक-मंडली के प्रति विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगा, जिनके अथक प्रयास से पत्रिका अपने सुंदर कलेवर में है। विद्यालय संपादक- मंडली के छात्र-छात्राओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा जिनके प्रयास से रचनाओं का संकलन एवं टंकण का कार्य संभव हो सका। अंतत: विद्यालय परिवार के सभी शिक्षकवृंद, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थियों को अतिशय धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। मैं यही कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा कि पत्रिका में जो बेहतर है, वह विद्यालय परिवार की मेहनत है और जो कमियों रह गई है वह संपादक की अल्पज्ञता है। आपके सुझाव और प्रतिक्रियाएँ हमारा मार्गदर्शन करेंगी। पत्रिका आपके हाथ में है। आपके सुझावों का स्वागत है।

**डॉ. विजय कुमार साव**
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

## स्वच्छता पखवाड़ा

# 1 सितंबर से 15 सितंबर-2023

छात्र-छात्राओं में स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं सचेतनता लाने हेतु 1 सितंबर से 14 सितंबर तक स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

# शिक्षक दिवस

**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।**

**गुरुर्साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:।।**

उपर्युक्त संदेश को छात्र-छात्राओं में संचारित करने हेतु भारत के प्रथम उप-राष्ट्रपति एवं प्रथम शिक्षा मंत्री डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म तिथि 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। विद्यालय में शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया । विद्यालय के बारहवीं कक्षा के छात्र-छात्रायें शिक्षक-शिक्षिका की भूमिका में नज़र आए।

# JANMASTHMI CELEBRATIONS

Krishna Janmashtami, the festival that celebrates the birth of Krishna, the eighth avatar of Vishnu was observed in KV NO. 1 Sector 30 Gandhinagar with a lot of excitement and fervour.

This day marks the passionate love for Little Kanha from all his devotees. The students of primary section experienced the joy beyond measure in holding the rope and cradling Krishna's idol, which was set up in the Krishna Corner created for this day.

All the students relished the delicious prasaad and wished the deity a Happy Birthday. While the little ones made beautiful crafts of a crown which had a peacock's feather in it to impersonate Krishna, the students of class I and II enthusiastically participated in an Inter class fancy dress competition based on the festival.

The corridors of the school were echoing with sounds of bhajans like 'Choti Choti Gayian' and 'Mere laddoo Gopal' to celebrate this special day.

The teachers narrated incidents from Kanha's life and enlightened children about the values that they can learn from his experiences. The sparkling festival was commemorated in a beautiful manner leaving Krishna's teachings as a guiding light for all of us to follow.

# प्रथम चिकित्सा जाँच

गांधीनगर महानगर पालिका द्वारा विद्यालय में छात्र-छात्राओं के चिकित्सा जाँच हेतु शिविर का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत कक्षा 1 से 12 तक छात्र-छात्राओं के मूलभूत शारीरिक परीक्षण किया गया।

# हिंदी पखवाड़ा

प्रशासनिक एवं कार्यालयी कामकाज़ में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के निर्देशानुसार विद्यालय में14 सितंबर से 29 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं कार्यालय कार्मिकों हेतु विविध प्रतियोगिताओं हिंदी कविता पाठ, निबंध लेखन, हिंदी सामान्य ज्ञान आदि का आयोजन किया गया।

# पोषण माह

भारत सरकार की प्रमुख पहल, पोषण अभियान ने गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं, किशोरियों और 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए पोषण संबंधी परिणामों को व्यापक रूप से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अभियान के तहत विद्यालय स्तर पर विविध कार्यक्रम एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया।

# अमृत कलश यात्रा - मेरी माटी मेरा देश

विद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षक वृन्द द्वारा प्राचार्य महोदय श्री आलोक कुमार तिवारी के दिशा-निर्देश न में आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का समापन 'मेरी माटी, मेरा देश' अभियान के अंतर्गत 'अमृत कलश यात्रा' का आयोजन करके किया गया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र-छात्राओं में अमर स्वतंत्रता सेनानियों एवं देश की रक्षा में सीमाओं पर तैनात जवान शहीदों के त्याग एवं बलिदान के भाव-बोध को जगाना है । इस गौरवमय क्षण पर विद्यालय की छात्राओं द्वारा अमृत कलश यात्रा निकाली गई । इस कलश यात्रा में लगभग 200 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया । कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया । तदुपरांत आदरणीय प्राचार्य जी के द्वारा छात्र- छात्राओं एवं शिक्षकों को पंच प्रण शपथ दिलवायी गई एवं अपनी ओजस्वी वाणी से छात्र- छात्राओं को राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति का संदेश दिया गया । 'मिट्टी को नमन एवं वीरों का वंदन' के तहत विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसके उपरांत छात्राओं के द्वारा अमृत कलश यात्रा निकाली गई । अंततः कार्यक्रम का समापन मातृभूमि की रक्षा में शहीद हुए अमर सेनानियों और सुरक्षा कर्मियों को श्रद्धांजलि एवं उनके सम्मान में विद्यालय परिवार के द्वारा विद्यालय परिसर के वाटिका में वृक्षारोपण कर किया गया।

# वीर गाथा प्रोजेक्ट 3.0

वीर गाथा प्रोजेक्ट 3.0 के अंतर्गत विद्यालय स्तर पर कक्षा 3 से 12 के छात्र-छात्राओं के लिए 1 सितंबर से 14 सितंबर 2023 के मध्य विविध गतिविधियाँ आयोजित की गई। काव्य लेखन, अनुच्छेद लेखन, चित्रांकन एवं मल्टीमीडिया प्रस्तुति आदि प्रतियोगिता आयोजित की गई।

# SAY NO TO DRUGS

नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत लायंस क्लब गांधीनगर फेमिना के द्वारा "SAY NO TO DRUGS" पर एक वार्तालाप सत्र का आयोजन कक्षा नौवीं से बारहवीं के छात्र-छात्राओं हेतु किया गया I छात्र-छात्राओं को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक किया गयाI

# index

1. Hindi Section 17

2. English Section 37

3. Sanskrit Section 55

4. Art Section 67

# हिन्दी विभाग

# सब कहते हैं.....

सब कहते हैं- छोडो ये घर, चलते हैं,
एक नए घर।
मैं कहती हूँ , "मैं जन्मी हूँ इस घर में"
उस नए घर में –वो बात कहाँ?
फिर भी,
सब कहते हैं- छोडो ये घर, चलते हैं,
एक नए घर।
नहीं कोई, जो मुझे समझे,
जिसे मैं समझती हूँ अपना, वो भी समझाकर चले जाते।
ये घर ही तो है जो समझता है मुझे।
मैं घर का दिल, घर मेरा दिल !
क्या वो शरीर ! जिसके अन्दर दिल न हो।
फिर भी,
सब कहते हैं- छोडो ये घर, चलते हैं,
एक नए घर।
बचपन में पेंसिल से खिंची गईं लकीरें,
मन्नत और प्यार की डोरियों से कम कहाँ!
वो दीवारें गुस्से में खुद को पीटने का हथियार लगती,
वो दीवारें ख़ुशी के पलों को सहेजकर रखती।
क्या इंसान है वो जो घर को बनाता और फिर छोड़ जाता।
सीख लें हम इस घर से जो बनते समय भी
उसकी मिटटी साथ रहती
और तोड़ने के बाद भी
फिर भी
सब कहते हैं- छोडो ये घर, चलते हैं,
एक नए घर।

**हरप्रीत,दसवीं-ब**

# गर्मी

गर्मी- गर्मी कहते हो !
गर्मी के लिए क्या करते हो?

पृथ्वी को बचानी है,
ढेर सारे पेड़ लगानी है ।

कृतिम वर्षा नहीं करानी है,
अरब देश नहीं बनानी है।

ए.सी नहीं चलानी है।
पृथ्वी को बचानी है।।

पेड़ गर्मी कम करता है,
मौसम सुहाना बनाता है।

हर मौसम में पेड़ लगानी है,
घरती में हरियाली लानी है।।

-

ज्योतिरादित्य देबनाथ
कक्षा दूसरी ब

## आगे बढ़ना है.....

फूलों भरी राहों के लिए,
कांटों पर भी चलना होगा।
अगर आगे बढ़ना है तो,
तूफानों से भीड़ना होगा।
मंजिलों को पाने के लिए,
हर मुश्किलों का सामना करना होगा।
ख्वाबों को सजाने के लिए खतरों से भी लड़ना होगा।
लहरें काट सकती नहीं, रास्ता मेरा,
डूबती कश्ती से ही समंदर पार करना होगा।
माना यह सफर है बड़ा मुश्किल,
मुस्कुराते हुए  उन राहों से मुझे तो गुजरना होगा।
चट्टानें होती हैं, हर मोड़ पर खड़ी,
तोड़कर राहें तैयार करना होगा।
मंजिलों को पाने के लिए,
हर मुश्किलों का सामना करना होगा।
आगे बढ़ना होगा .....

कक्षा: तीसरी (स)
प्रांजल पटेल

# प्यारे बच्चें

हम बच्चे हैं भोले भाले,
कितने अच्छे कितने प्यारे ।
जब हम स्कूल में आये नये-नये
हम रहते थे डरे-डरे ।
गणित लगता था एक पहेली,
अब लगता जैसे हैं सहेली।
अंग्रेजी लगता था डरावना,
हो गया अब मन लुभावना ।
हिंदी की क्या बात बताए,
मात्राओं ने कर रखा था परेशान ।
अब 'क ख ग' से हो गयी यारी,
हिंदी से हो गया दुलार ।
EVS को मैडम ने आस-पास जब दिखलाया,
ये देख-पढ़ मेरा मन अंदर ही अंदर मुस्काया ।
अब बात उसकी आती,
जो हमारे मन को है नचाती ।
खेलकूद का पिरियड़ जब आता,
दिल अंदर से खुश हो जाता ।

जीया
कक्षा – दूसरी –अ

# ॥ बारिश आयी ॥

आसमान पर छाये बादल,
चारों ओर गूंजे संगीत के मीठे बोल ।।

बारिश आयी, बचपन की यादें लायीं,
दिल को हर पल नयी उम्मीदें दिखाई ॥

मस्ती भरी बारिश में, छाता करता टप-टप-टप,
नाचा मोर पंख फैला के झप-झप झप।
सारे बच्चे करते छप - छप - छप ॥

हम बच्चों के मन को भाया।
बारिश ने हमको बहुत भिगाया ।।

भूमि अग्रवाल
कक्षा - पाँचवी "ब"

# सफलता

तू सोच मत कि तू नहीं कर पाएगा
बस मेहनत कर तू सफल हो जाएगा।
मन में वो जो तूफ़ान है, एक दिन वो भी खत्म हो जाएगा
तू विश्वास रख तू यह भी कर पाएगा ।
यदि तू पूछता है कि वो दिन कब आएगा
जिस दिन यह युद्ध खत्म हो जाएगा
तो,जिस दिन तू समझ पाएगा
जिस दिन तू परख पाएगा
उस दिन तू संभल पाएगा।

माना मार्ग कठिन है
माना ये मान लेना कठिन है ,
मगर तू खुद को एक बार जगा तो सही
तू खुद को एक बार मना तो सही
तू अपनी दृष्टि तो बदल तेरी सृष्टि बदल जाएगी।
तू बस सोच मत कि तू नहीं कर पाएगा
बस कोशिश कर, तू सफल हो जाएगा ।

रूक मत नहीं तो तू खो जाएगा
झुक मत नहीं तो तू सबका उपहास बन जाएगा।
किस्मत थामे मत बैठ, तू पीछे छूट जाएगा
रोते रोते ना जाने कहाँ को जाएगा ।

हार गया तो ज्यादा से ज्यादा क्या हो जाएगा
हिम्मत मत हार तू वापस बल पाएगा।
बढा लेना वो कदम वापिस
कर लेना वही गुज़ारिश
समझ लेना क्या भूल थी
जो उस समय मंजूर थी।
हार तो बस एक ज़रिया है जीत का
कैसे अनुमान होता तुझे इस बात का
अगर तू कभी हारता ही नहीं
अगर तुझे कोई बतलाता ही नहीं।

जिस दिन, तू सफल हो जाएगा
उस दिन तू पहला पद लेकर ही जाएगा।
उस दिन तेरे तेज से सूर्य भी छिप जाएगा
तेरे मुस्कान से यह संसार मुस्कुराएगा।
तू सोच मत कि तू नहीं कर पाएगा
बस मेहनत कर तू सफल हो जाएगा ।

सृष्टि

कक्षा – ९ 'अ'

# घर

घर हैं क्या?
वह रिश्तों में छुपी भावना है
घर बनता है घरवालों से
न की चार दीवारों से।

घर होता है सबका प्यारा ,
सबसे अच्छा सबसे न्यारा
मिलती जहाँ दिनभर की थकान से शांति ,
अलग अलग होकर भी है सब एक भांति ।

रहते है सब यहाँ मिल जुलकर
मानते है हर खुशी साथ रहकर
घर कोई मकान नहीं है एक एहसास
जो होता है सबके दिल के खास ।।

**तिथि बाघेला**
**कक्षा -११ 'ब'**

# 'विलोम' शब्द गीत

दाएँ-बाएँ, पीछे-आगे
यहाँ-वहाँ, रुके-भागे

इधर-उधर, आज-कल
हल्का-भारी, स्थिर-चंचल

मोटा-पतला, चुस्त-ढीला
ज्यादा-कम, सुस्त-फुर्तीला

ज्ञान-अज्ञान, सत्य-असत्य
ज्ञानी-अज्ञानी, गुरु-शिष्य

रात-दिन, अंधकार-प्रकाश
नीचे-ऊपर, धरती-आकाश

पढ़ना-लिखना, सुबह-शाम
अल्प-अधिक, काम-आराम

एक- अनेक, निर्बल-सबल
जोड़-तोड़, कठिन- सरल

माता-पिता, ठोस-तरल
सूर्य-चन्द्रमाँ, गर्म-शीतल

ज्योत भटासणा
कक्षा-७ 'ब'

# लघु नाटक

## स्कैम कॉल

टीना: यह कॉल किसका आ रहा है... इसमें नाम तो नहीं दिख रहा ....अच्छा याद आया मम्मी पापा ने बाहर जाते हुए कहा था कि अगर उनका फोन बंद हो गया तो, वे चाचा जी के फोन से कॉल करेंगे। (कॉल उठाने के बाद): हैलो... कौन?

स्कैमर : हैलो बेटा... आपके मम्मी-पापा कहाँ हैं?

टीनाः मम्मी-पापा तो घर पर नहीं हैं। आप कौन?

स्कैमर: बेटा, मैं के.बी. सी. से बात कर रहा हूँ।

टीना: के. बी. सी. मतलब..... "कच्चा बादाम कंपनी?"

स्कैमर : नहीं, नहीं ! बेटा, के.बी.सी का मतलब "कौन बनेगा करोड़पति।"

टीना: अच्छा आप वहीं हैं, जिनकी वजह से मेरी रोज बेइज्जती होती है, क्योंकि मुझे किसी प्रश्न का उत्तर आता ही नहीं है।

स्कैमर : (मन में) ओह ! यह किस बच्चे से पाला पड़ गया। (जोर से) बेटा आपको बस 3 प्रश्नों का उत्तर देना होगा I अगर तुम तीन प्रश्नों का उत्तर दे दी तो.. टी-वी पर के. बी. सी. आने का मौका मिलेगा। आप कोशिश किजिए।

स्कैमर : पहला प्रश्न, भारत के 13वें राष्ट्रपति का नाम बताइए।

टीना: उनके बारे में मैंने पढ़ा था... कुछ मुखर्जी था...याद क्यों नहीं आता I हाँ.... रानी मुखर्जी।

स्कैमर: रानी मुखर्जी ?

टीनाः क्यों वे नहीं हैं?

स्कैमर: नहीं, नहीं, वही हैं।

स्कैमर: अगला प्रश्न- भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम बताइए।

टीना: उनको तो मैं रोज टी वी में देखती हूँ। असीत मोदी।

स्कैमर : (आश्चर्य से) आसीत मोदी!

टीना: क्यों वे नहीं है?

स्कैमर: नहीं, नहीं बेटा वही है।

स्कैमर: (मन में) आजकल के बच्चों को देश -दुनिया की कुछ खबर ही नहीं है। (जोर से) अगला और आखरी सवाल जो बाइडन से पहले अमरिकी राष्ट्रपति का नामा बताइए।

टीना: मैंने, उन्हें कई बार टी.वी. में देखा है। इसका जवाब होगा-मैक्डोन्ल्डस !

स्कैमर : मैक्डोन्ल्डस!

टीनाः क्यों वे नहीं हैं?

स्कैमर: नहीं, नहीं, वही हैं I उनके अलावा और हो भी कौन सकता है, बेटा I आपने सारे सवालों के जवाब ठीक दिए हैं। अब आप मुझे आपके पापा के ए. टी. एम. का नंबर बताइए।

टीना: 100

स्कैमर : आगे.....

टीना: आगे आप इस नंबर पर कॉल लगा लिजिए I आपको सब पता चल जाएगा I

स्कैमरः मतलब ?

टीना: मतलब मुझे पता है कि आपलोग जैसे स्कैमर झूटे काल करके बच्चों से धोके से ए टी एम का नंबर लेकर या ओ टी पी लेकर पैसे चोरी कर लेते हैंI मम्मी ने आप जैसे ठगी करने वाले लोगों के बारे में बताया था I ( हँसते हुए) अगली बार स्कैम कॉल करने के पहले ध्यान रखना कि कहीं मैं वही तो नहीं हूँ !

टीना : ओके अंकल .....टाटा !

स्कैमर: (आश्चर्य से सर धुनते हुए) आजकल के बच्चे हमें भी जानने लगे हैं !

**सामसे**

**कक्षा – ग्यारहवीं 'स'**

# आत्म मंथन : आंतरिक अमृत

आत्म मंथन अर्थात् अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों की गहराई की क्षमता को जानना । यह एक ऐसी प्रक्रिया है,जिसमें मनुष्य अपने मन का सागर मंथन कर अपनी आतंरिक शक्तियों से अपना परिचय करता है। आज इस समय मनुष्य पृथ्वी छोड़ ब्रह्माण्ड को जानना चाहता है परन्तु अपने आप को जानने से कतराता है। आत्म-मंथन मनुष्य को अपने आप को बेहतर ढंग से समझने का अवसर प्रदान करता हैI इससे मनुष्य अपने जीवन में कई सकारात्मक बदलाव ला सकता है I

जीवन की हर परीक्षा में सफ़लता प्राप्त करने के लिए मेहनत, कार्य कुशलता एवं आत्म मंथन जरुरी है, क्योंकि आत्म मंथन हमें हमारी शक्तियों एवं कमजोरियों से अवगत कराता है और उनको सुधारने का अवसर प्रदान करता है I आवश्यकता के हिसाब से हम अपनी क्षमताओं को विकसित भी कर सकते हैं I

मानसिक विकास के लिए आत्म मंथन एक महत्वपूर्ण साधन है। यह व्यक्ति को अपने विचारों और भावनाओं के प्रति जागरूक बनाता है। आत्म मंथन के माध्यम से हम अपने मन उठने वाले संदेह, भय और नकारात्मकता को पहचान कर दूर कर सकते हैं। इसके अलावा आत्म मंथन के कई और लाभ भी हैं- निर्णय लेने की क्षमता में सुधार, मानसिक शान्ति एवं एक सकारात्मकत सोच का विकास ।

आत्म मंथन एक ऐसी विधि है जो हमें अपने जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य की ओर ले जाती है। यह हमारे जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य कि और ले जाती है I यह हमारे जीवन को एक नई दिशा प्रदान करती है I इसलिए आत्म मंथन को हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने की आवश्यकता है ताकि हम सच्चे अर्थो मे आत्म साक्षात्कार कर सकें ।

# विकसित भारत 2047

वर्ष 2047 में भारत के लिए मेरा दृष्टिकोण समृद्धि और समावेशिता का है, जहां गरीबी समाप्त हो गई है, और प्रत्येक नागरिक अपने घरों में रहता है। सड़कें भिखारियों से मुक्त हो गई हैं, और झुग्गियों को सामुदायिक अपार्टमेंट में बदल दिया गया है, जो पहले से हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए सम्मानजनक रहने की स्थिति प्रदान कर रहा है।

भारत पहले से ही विकास की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। उदाहरण के लिए, 2023 में जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करना एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी, जिसने वैश्विक मंच पर हमारे देश के बढ़ते प्रभाव को प्रदर्शित किया।

मैं 2047 तक एक ऐसे भारत की कल्पना करता हूं जो जातिगत भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त हो, जो अक्सर हमारी प्रगति में बाधा बनती हैं। जाति, लिंग, नस्ल या आर्थिक पृष्ठभूमि पर आधारित भेदभाव सामाजिक सद्भाव और विकास को कमजोर करता है। मुझे उम्मीद है कि 2047 में ये पूर्वाग्रह अतीत की बात हो जाएंगे और उनकी जगह समानता और समावेशिता ले लेगी।

इसके अलावा, मैं 2047 में भारत के राजनीतिक भ्रष्टाचार से मुक्त होने की आकांक्षा रखता हूँ। मैं एक ऐसे राजनीतिक परिदृश्य की कल्पना करता हूँ, जहाँ नेता आलोचना और विभाजन में उलझने के बजाय देश की भलाई के लिए मिलकर काम करें।

भारत में बुनियादी ढांचा अत्याधुनिक होना चाहिए, जो ऊर्जा की बर्बादी को कम करने और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों द्वारा समर्थित हो। एक अच्छी तरह से विकसित बुनियादी ढांचा हमारी निरंतर प्रगति के लिए महत्वपूर्ण होगा।

किसी भी राष्ट्र की ताकत उसके नागरिकों में निहित होती है, विशेषकर शिक्षित और सतर्क युवाओं में। इसलिए, 2047 में भारत के लिए मेरे दृष्टिकोण में एक ऐसी आबादी शामिल है जो न केवल शिक्षित है, बल्कि देश की वृद्धि और विकास में योगदान देने के लिए भी समर्पित है।

कनिका शर्मा
बारहवीं-स

# राष्ट्रभाषा हिन्दी के कुशल प्रणेता काका कालेलकर

---

भारतीय धरा पर राष्ट्रभाषा हिन्दी की नींव मज़बूत करने तथा एक कुशल प्रणेता की भाँति अहिंदी प्रदेशों में हिन्दी प्रयास का कालेलकर काका में प्रेमियों-हिन्दी वाले करने प्रसार-प्रचार का भाषा- -था कहा उन्होंने में अधिवेशन के भास प्रचार हिन्दी भारत दक्षिण में 1938 सन् है। अतुलनीय"राष्ट्रभाषा प्रचार हमारा राष्ट्रीय कार्यक्रम है।"1 कालेलकर जी का यह वक्तव्य कोई कोरी अवधारणा नहीं थी, बल्कि आजीवन उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम का दर्जा दिया और इसके लिए अथक प्रयास करते रहे। गांधीजी जब दक्षिण अफ्रीका से लौटे और शांतिनिकेतन गए, जहाँ उनकी भेट दत्त बाबू, पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्णन कालेलकर से हुई। तभी गांधी की दूरदृष्टि एक जौहरी की भांति इस नायाब हीरे की पहचान कर चुके थे कि काका कालेलकर ही हैं, जो राष्ट्रभाषा हिन्दी का सजग प्रहरी हो सकता है और अहिंदी प्रदेशों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारसौपा इन्हें भार दायित्व का प्रसार- जा सकता है। यही वजह है कि गाँधीजी ने काका साहेब को गुजरात शिक्षा परिषद् के दूसरे अधिवेशन में उपस्थित रहने का आग्रह किया और इसके लिए को लिखने निबंध एक पर विषय "है सकती हो भाषाराष्ट्र की देश इस हिन्दी" लिया। कर स्वीकार प्रस्ताव यह का गांधीजी उन्होंने । कहाइस प्रकार एक मराठी, एक गुजराती के कहने पर हिन्दी के प्रति समर्पित हो गया। काकासाहेब का इस संदर्भ में कहा भी कि कल्पना मुझे समय उस" – सन् था गया लिखा लेख यह है। वाला करने परिवर्तन का महत्त्व में भाग्य मेरे निबंध यह कि थी नहीं भी "में। दिनों आखिरी के 19172

राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करने की उनकी अपनी अनोखी पद्धति थी और उसकी गंध उनके लेखों में सर्वत्र मिलती है। हिन्दी क्यों, अंग्रेजी क्यों नहीं इसका विवेचन करते हुये वे कहते हैं -"अंग्रेजी जानने वाले अपनी एक अलग जाति बनाते हैं, दूसरी भाषाएँ सीखते नहीं। अपनी जन्मभाषा तो बचपन से ही सीखनी पड़ी, नहीं तो उसे भी नहीं सीखते।"3 काका साहेब हिन्दी को स्वीकार करने के दो प्रमुख कारण मानते थे। एक तो उसकी लिपि नागरी है जो संस्कृत की लिपि होने के कारण सर्वत्र भारत में फैली हुई है। दूसरा कारण यह है कि सभी प्रान्तों के संतों ने उसे अपनाया है।

विष्णु प्रभाकर काकासाहेब की हिन्दी भाषा के प्रति उनकी निष्ठा एवं साधना को रेखांकित करते हुये लिखते हैं -"बहुत गहरे डूबे थे काकासाहेब। हिन्दी के माध्यम से वे 'एकात्म' साधना चाहते थे। समन्वय की भाषा हिन्दी ही हो सकती है, इसीलिए हिन्दी उनसे चिपक गयी थी। नहीं उन्हें ने जगत हिन्दी ..... करते कैसे वे तब सम्मान उचित उनका पहचाना।? उन्होंने हिन्दी को नया भंडार दिया। मुहावरे दिये, मौलिक उद्भावनाएं दीं। उनका विपुल साहित्य शिक्षा, संस्कृति, धर्म, राजनीति, भाषा, भूगोल, खगोल और इतिहास सभी मौलिक चिंतन से ओतहै विशेषता और एक उनकी है। प्रोत-, किसी भी वस्तु को व्यापक संदर्भ में देखने की दृष्टि। यही समग्रता है। समग्रता में ही किसी को उसके सही रूप में समझा जा सकता है।"4

एक समय जब काका साहेब गुजरात विद्यापीठ के काम के साथ ही गुजरात छोड़ने का निर्णय लिया, तब बापू बहुत नाराज हुये और अंतत साहेब काका लिए के करने प्रचार का हिन्दी में प्रांत दक्षिण :

काकासाहेब 'मेरी जीवन यात्रा' में लिखते हैं -"गांधीजी के विचार के मुझे दो महत्व के कार्य करने थे, प्रथम मुझे दक्षिण में जाकर वहाँ का हिन्दी प्रचार का काम अधिक व्यवस्थित और मजबूत तरीके से करना था। दूसरे, उसके लिए दक्षिण के स्थानीय लोगों से पैसे एकत्र करके राष्ट्र भाषा प्रवृत्ति की जड़ दक्षिण भारत के लोगों के जीवन में पहुंचानी थी। सन् १९३४ के दिसम्बर के प्रारम्भ में उन्होंने यह काम मुझे सौंपा। दक्षिण में सर्वत्र घूमकर 'भारतीय संस्कृति को व्यक्त करने वाली', और '१२ करोड़ लोगों की जन्म भाषा' हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकारने में भारतीय संस्कृति समर्थ और परिपुष्ट होगी, यह समझाने का काम दो महीने चलाया। पैसे भी ठीककिये एकत्र ठीक-। सन् १९३४ के अन्त में शुरू किये उस काम को दो"आया। वापस वर्धा में करके पूरा में महीने एक-5

हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु जब वे दक्षिण भारत स्वागत कहकर यह उनका तो पहुँचे में (केरल) -है उल्लेखनीय प्रतिक्रिया की काकासाहेब पर इस "नॉर्थ। दी फ्राम इन्वेजन आर्यन एनअदर" कि हुआ "उत्तर भारत से दक्षिण पर एक चढ़ाई लेकर आए हैं, ऐसा कहकर मेरा विरोधी स्वागत देखकर मुझे मजा आया। एक साथी ने पूछा,करेंगे क्या अब" ?" उनकी आवाज में उलझन भरी हुई थी। मैंने कहा, मैं इसका" "ही। हूँ तो शास्त्री-शिक्षण मैं आखिर उठाऊँगा। फायदा पूरा6 गौरतलब है कि इतना सख्त विरोध होने के बावजूद भी काका साहब ने उन्हें एकत्र लाने का प्रयास किया। और कहा-" भाइयों, आपने भूल की है, मैं न तो हूँ उत्तर का, न दक्षिण का। मैं तो उत्तर और दक्षिण के बीच मध्य का हूँ। (का तरफ़ की पश्चिम जरा) हम कि हैं जानते आप रोकेंगे। उनको ही हम में बीच तो बोलें धावा पर दक्षिण यदि लोग के उत्तर सब को महराष्ट्रियों'दक्षिण' कहते हैं। हिन्दी राष्ट्र भाषा भले ही हो, किन्तु मेरी जन्म तो भाषा-'महाराष्ट्री' है। उत्तर की फ़ौज लेकर मैं धावा क्यों बोलूँलड़ूँगा नहीं विरुद्ध के उत्तर मैं क्या करके नेतृत्व ही आपका !?"7

काका कालेलकर जी अंग्रेजी के प्रभुत्त्व को समाप्त करने तथा राष्ट्रभाषा और प्रांतीय भाषा के समागम के महत्त्व को रेखांकित करते हुये कहते हैं कि "मैं आपसे कहने आया हूँ कि अब हम ब्राह्मणों का मुल्लाओं का अथवा अंग्रेज आई.सी.एस .या मिशनरियों का राज्य नहीं चाहते। हम भारतीय प्रजा का राज्य चाहते हैं। यह राज्य प्रजा की भाषा में चलना चाहिए। केरल का राज्य न चलना चाहिए अंग्रेजी में, न चलना चाहिए हिन्दी में। वह तो मलयालम में हो चलना चाहिए।"8

आगे वे हिन्दी को राष्ट्रीय एकता एवं प्रतिष्ठा का प्रतिरूप मानते हुये लिखते है -"और भारत की एकता संभालनी है न ? वह शक्य होगा राष्ट्रभाषा द्वारा। बिना एकता के नहीं टिक सकेगी हमारी स्वतन्त्रता, और न टिक सकता है हमारा सामर्थ्य। दुनिया में हमारे देश की प्रतिष्ठा भी नहीं जम पायेगी और इस देश की भाषाओं में जिस भाषा को बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक होगी और जो भाषा समस्त जनता के लिए आसान होगी, ऐसी स्वदेशी भाषा ही राष्ट्रभाषा बन सकेगी। इसलिए मैं आपको कहने आया हूँ कि मलयालय की मदद में, उत्तर भारत की जनता की भाषा हिन्दी 'एक जरूरी दूसरी भाषा के तौर पर आप सीख लें और फिर शंकराचार्य की तरह उत्तर भारत पर धावा बोल दें। आपको सिर्फ़ आत्मरक्षा करनी है या सर्वसंग्राहक एकता का धावा लेकर सर्वत्र पहुंचना है?"9

आगे वे 'हिन्दी यानी उत्तर का आक्रमण' अध्याय में दक्षिण प्रान्तों के लोगों की इस शंका का निवारण करने का भरसक प्रयास करते हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाना उनकी प्रांतीय

भाषा की अस्मिता के संकट का मसला नहीं, अपितु अखिल भारतीय एकता का मसला है। इसके लिए वे आद्य शंकराचार्य का उदाहरण रखते हैं कि उत्तर की भाषा सीखकर उत्तर के शास्त्रों में प्रवीण दिग्विजय चलाया और देश के चारों छोरों पर आध्यात्मिक मठों की स्थापना की। जो राष्ट्रीय सांस्कृतिक- हैं कहते वे है। परिचायक का एकता"आप संस्कृत उत्तम जानते हैं। संस्कृत उत्तम तरीके से सीख रहे हैं। उत्तर भारत से डरकर यदि आप दक्षिण भारत के लोग अलग रहेंगे और अंग्रेजों की छत्रछाया में रहना चाहेंगे तो देश के आप टुकड़े करेंगे। फिर एक चला में हाथ के राष्ट्र जबरदस्त भिन्न-भिन्न टुकड़ा एक- क टालने सब यह जायेगा।े लिए उत्तर की प्रजाकीय भाषा सीखकर उसका प्रचार करने का काम आप से लीजिए। जो काम एक समय श्री शंकराचार्य ने किया, वही आज आपको दूसरे ढंग से करने का है; किन्तु उसके लिए अखिल भारतीय एकता का आग्रह आपको संभालना होगा। यह मैंने उत्साहपूर्वक उनको कहा। उनका सारा विरोध तो पिघल हो गया; किन्तु केरल में हिन्दी प्रचार का काम उन लोगों की ही सहायता से पूरे जोश में शुरू हो गया।"10

उनका यह कहना कि" -मेरा भाग्य हिन्दी के भाग्य के साथ जुड़ गया"1 1तथा तो अब"यह मेरा जीवन- "गया। बन सा-कार्य12 – उनके हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण भाव को दर्शाता है।

काका साहेब यह ज्ञात था कि विविधता में एकता यही भारत वर्ष का जीवन मन्त्र है। भारत वर्ष के विविध प्रान्तों में ऐसा ही हार्दिक ऐक्य हिन्दी भाषा के द्वारा हो सकता है। वे बहुत आशान्वित थे कि कर्नाटक की भाई हिन्दी में विशेष प्रगति करेंगे और नागरी लिपि को अपनी घर को बनायेंगे ऐसी आशा रखता हूँ।

वे स्पष्ट कहते हैं कि " –अब हमें समझना चाहिए कि देकर दुहाई की नाम के गांधीजी (१) हिन्दी में संविधान भारतीय से प्रयत्न के गांधीजी (२) है। नामुमकीन अब करना प्रचार का हिन्दी राष्ट्रभाषा उ है मिला स्थान जो कोस संविधान की दुहाई देकर भी हम हिन्दी का प्रचार सफलतापूर्वक नहीं कर सकेंगे। (३ बहुमती) की संख्या प्रचंड की लोगों वाले जानने और वाले बोलने हिन्दी (की आगे दलील ( राज्य का अंग्रेजो और सकेगी बन जरूर राष्ट्रभाषा हिन्दी सकेंगे। कर नहीं फैलाव का हिन्दी हम भी करके जरूर हटेगा। लेकिन उसकी शर्तों का पालन निष्ठा से करना होगा। (४ को लोगों अभिमानी के हिन्दी ( उत्साह पूरे वाले हिन्दी होगी करनी मदद को भाषाओं प्रादेशिक और प्रांतीय खिलाफ के राज्य के अंग्रेजी उन उन लिए के उन्नति की साहित्य उनके और को भाषाओं प्रादेशिक की भारत सेप्रदेशों में जाकर उत्तम सेवा करें। (५ इतना अगर दें। छोड़ पर लोगों भाषी अहिन्दी के राष्ट्रीयवृत्ति काम का प्रचार राष्ट्रभाषा और ( "रहेगी। ही कर बन राष्ट्रभाषा हिन्दी समय यथा तो किया1 3काकासाहब ने मुख्य रूप से तीन भाषाओं में लिखामराठी -, गुजराती और हिन्दी । लगभग 125 पुस्तकें इन्होंने लिखी I हिन्दी मे लिखी पुस्तकों की संख्या चालीस के लगभग है।

उपर्युक्त तथ्यों का विवेचन और विश्लेषण करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि काकासाहेब कालेलकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के सजग प्रचारक होने के साथ थे। भी प्रणेता कुशल एक साथ- गाँधीजी की प्रेरणा स्वरूप उनके हृदय में हिन्दी राष्ट्रभाषा रही। प्रदीप्त आजीवन वह ,जली ज्योति की प्रेम- माजस प्रेमी-हिन्दी प्रति के भाव समर्पण एवं कार्य गए किए द्वारा उनके के में रूप के प्रचारक हिन्दी की कालेलकर काका भक्त अनन्य के हिन्दी रहेगा। ऋणी उनका हमेशास्पष्ट अवधारणा थी कि जिसे हम राष्ट्रभाषा कहते हैं होनी राष्ट्रभाषा" है। शक्तिशालिनी लिए के करने सिद्ध एकता भावात्मक की देश वह ,

'लेंग्वेज ऑफ इंटीग्रेशन'- भावात्मकएकता सिद्ध करनेवाली भाषा।14" आज हम पर दूसरा ही संकट कायम है, गाँधीजी और काकासाहेब ने राष्ट्रभाषा के लिए जो परिवेश तैयार किए थे, वह आज नहीं हैं। राष्ट्रीय संविधान में हिन्दी को जो स्थान दिया गया था, वह आज तत्त्वत हिन्दी है। नहीं :वस्तुत है। कायम : उठाकर लाभ का परिस्थिति इस है। रहा कर नहीं काम एंजीन जानेवाली ले आगे को अंग्रेजी आगे बढ़ रही है। ऐसी परिस्थिति में हम हिन्दी को सर्वमान्य और सर्वसमन्वयकारी शैली प्रदान कर हिन्दी को आगे बढ़ा सकते हैं। हम हिन्दी द्वारा कालेलकर काका और गाँधी महात्मा तथा लेकर संकल्प नया को प्रेमियों- गए सुझाए हेतु प्रसार-प्रचार के हिन्दी राष्ट्रभाषा विचारों पर पुनर्विचार करने की जरूरत है।

**डॉ साव कुमार विजय .**
**स्नातकोत्तर शिक्षक(हिंदी)**

# स्थानांतरण

केन्द्रीय विद्यालय में शुरू हुई
फिर स्थानांतरण की बेला |
चर्चा-परिचर्चा, विचार-विमर्श,
हर तरफ शिक्षकों का मेला ||

कहीं उत्सुकता, आकांक्षा, अभिलाषा,
तो कहीं पर छाई घोर निराशा |
किसी को अन्यत्र जाने का डर हैं,
तो कहीं हैं घर आवन की आशा ||

हर मन में आतुरता और भय,
क्या होगा कुछ नहीं निश्चय |
किन्तु सबको हैं संज्ञान ,
अबकी बार जाना हैं तय ||

होगी नई जगह ,नया विद्यालय,
थामेंगे नव विद्यार्थियों का हाथ|
किन्तु मन आकुल हैं क्योंकि,
ये साथी न होंगे साथ ||

कैसे भूल पाएंगे ये अनुभव,
जो हमने साथ बिताए हैं|
किन्तु प्रकृति का नियम यही हैं,
वो जाएंगे , जो आए हैं ||

चल देंगे लेकर नया विश्वास,
साथ होगी अपनी ये मिठास|
होगा नया परिसर, नया माहौल,
नए विद्यार्थी, नया अहसास ||

शनैः शनैः हम ढल जाएंगे,
नई पहचान, नए रिश्ते बन जाएंगे |
नए साथियों, नए विद्यार्थियों में,
हम सहज ही घुल मिल जाएंगे ||

के. वि. ने यही सिखाया हैं,
नित नवीनता को अपनाना हैं|
संगठन की सुंदरता हैं यहीं,
जिसको हम सबने माना हैं ||

**श्रीमती प्रतिभा त्रिवेदी**
**प्र. स्ना. शि. हिन्दी**

# सार

रोज़ एक नया जीवन
हर दिन नई कहानियाँ
कहानियाँ भी अर्थहीन, फिर भी सुनना जरूरी सुनकर ,
उन पर  अपनी राय देना भी जरूरी|
एक आनंद ,एक नया उत्साह
प्रत्येक दिन|
मासूम चेहरे, मदमस्त जीवन
कभी झूठे, कभी सच्चे
पर दोस्ती निभाने में बड़े पक्के|
घर पर भले ही ना माने बात,
पर हमारे लिए तो कर जाए
विद्यालय का कोई भी काम |

इनके बीच रहकर
ना याद रहे घर बार
इनको पढ़ाने-समझाने में
कहाँ रहता हैं वक्त का ख्याल |

कभी जो न होने दे उम्र का अहसास
अपार स्नेह, बेहद सम्मान,
और खुशियों का भंडार|

गर्व हैं मुझे मेरे विद्यार्थियों पर
बने देश का गौरव
मैं उनके साथ हूँ सदैव
और वे हर पल रहते हैं मेरे साथ|

**श्रीमती भारती मोहल**
**प्र. स्ना. शि. गणित**

# अवसर

मिला अवसर इस संसार में,
कुछ कर दिखाना इस जग में,
प्रारम्भ से शिक्षा पायी इस जग में ,
शब्द ज्ञान ग्रहण किया बालपन में।
हुई युवावस्था इस संसार में,
पढ़-लिखकर बना सुसंस्कृत,
देश सेवा का लिया प्रण मैंने,
शिक्षा प्रदान की मैंने देश सेवा में।
मिला अवसर गुरु ज्ञान वाणी का,
पाया आदर्श सद्गुण ह्रदय में,
ज्ञान गंगा की अमृत वाणी से,
मिला अवसर परमात्मा से मिलन का।

**श्री एल. जे. वाघेला**
**प्रधानाध्यापक: प्राथमिक विभाग**

# ENGLISH

## Section

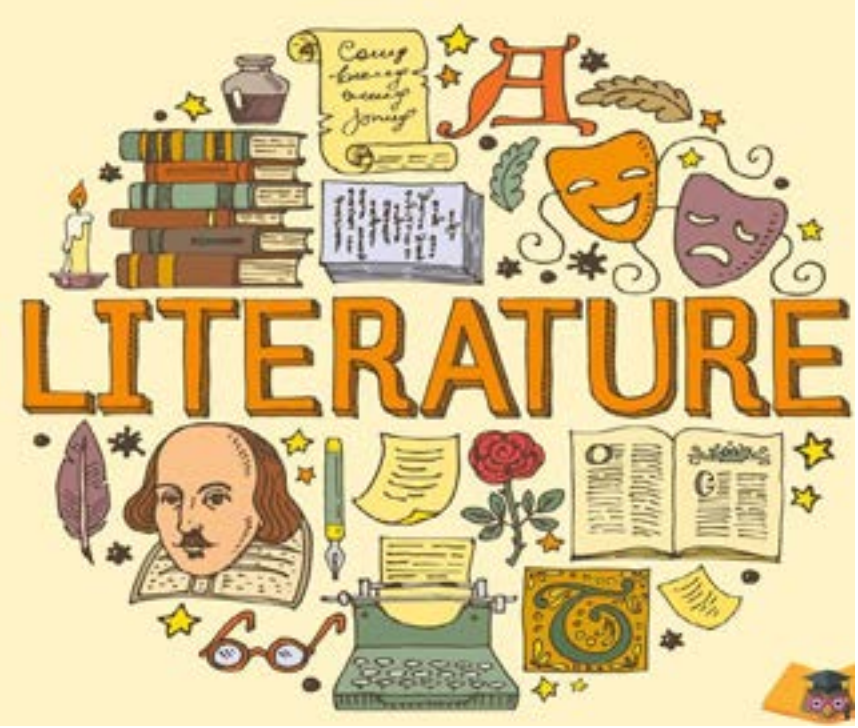


"Literature is a luxury; fiction is a necessity."

## World without Walls

Imagine a world with no walls in between,
When borders dissolve like a soft, gentle dream.
No lines to divide, no chains to confine
Where hearts beat as one, in rhythm, in rhyme.
The oceans would flow without fear of the shore,
The winds would rush freely, no door to implore.
Mountains would whisper to valleys below,
And rivers would wonder where they choose to go.
No barriers of skin, nor of creed, nor of race,
Just the pure, boundless light of a shared human grace.
Eyes meet without judgment, hands clasp without fear,
A world born of kindness, where all souls are dear.
Imagine this world, where walls cease to be,
Where we are all vessels of pure empathy.
No longer alone, no longer apart,
But linked by the threads of a compassionate heart.
So let us build bridges, let kindness befall-
In this beautiful dream, a world without walls.

Sarthak Tiwari, XI- A

# THE BUTTERFLY AND THE FLOWER

Once upon a time, there was a young butterfly who accidentally entered a house. She entered through a window. When she entered she saw a beautiful flower pot with some beautiful yellow-colour flowers in it.

She lived in the flower pot for something around 2 days. One morning, when the window was open, she went outside to get fresh air. She roams and roams and later, she went too far from the house. After an hour when she tried to enter the house she saw the window that had beautiful flower pot with beautiful flowers in. It was closed. She became very sad. She had to stay outside for a week because the owner of the house had gone outside for a vacation with his family.

After a week when the owner of the house came back, he opened the windows. When the sad butterfly saw this, she rushed to window to see the flower pot. But sadly, when she saw the flower pot, it was all dried up. She said to herself "Oh no! What am I going to do now?". She sadly went outside. She sat under a tree crying. After a while an old wise butterfly came and saw the sad butterfly she said to her "What happened my child?" the young butterfly told her everything. The old wise butterfly said "My child, what happened if you lost the beautiful flower pot, you will find another one prettier than that."

The young butterfly understood and thanked the old wise butterfly. After a few weeks, the butterfly saw another flower pot with more beautiful flowers in it. She thanked the old wise butterfly in her mind.

MORAL: Don't be sad about only one thing that you find special and you've lost it. You'll find another one which is more special and beautiful than that.

NANDINI
CLASS-VIII-C

# INTERESTING RIDDLES

1. What is half of four plus four?

2. What has 88 keys, but cannot open a single door?

3. People buy me to eat, but never eat me? What am I?

4. What five letter word becomes shorter when you add two letter to it?

5. I shoot but never kill? What am I?

6. You see me once in June, twice in November and not at all in may? What am I?

7. I get smaller every time I take a bath? What am I?

8. John's father has three son's: Tom, Paul and?

9. I am a bird, I am a fruit and I am a person? What am I?

10. What has teeth but can't bite?

Answers:-

Answer 1: Six.
Answer 2: A Piano.
Answer 3: A Plate.
Answer 4: Short.
Answer 5: A Camera.
Answer 6: The letter 'e'
Answer 7: A bar of soap.
Answer 8: John.
Answer 9: Kiwi.
Answer 10: A Comb.

K CHARVIK
Class V-C

## JOKE

Doctor: Drink 8 glass of water to stay hydrated.

Rahul (sadly) : I can't Doctor.

Doctor: why?

Rahul: we have only four glasses in our home.

AARAV KETAN DESAI,
IV-C

## My Mother

My mother is my word
My mother is the best,
She never ever rest
She works hard day and night,
To make my Future very bright
Reading books, playing games,
You are my umbrella when it rains,
Making me feel like a team,
Helping me to get my dream
There is no end what you do,
You are my life.
Thank you Maa.

Shivam Prajapati
II-C

# POEM

PM SHRI K.V. NO-1  Gandhinagar is name of my school,
It's a big Knowledge Pool,

Early in the Morning,
When birds are singing,

Our teacher welcomes us,
When we are off to the bus,

We love our school,
We write, we sing, we run
Lovely to have such fun.

- ADITYA KETAN DESAI,
- CLASS- III B

# POEM – MY TEACHER

My teacher is the best,
She never ever rests.
She works hard day and night,
To make one very bright.
She teaches new things every day,
And there is always time to play.
She is like mother to me,
That is why I am not afraid of her.
One day when I will grow up,
I would like to thank her.

FOR NEVER GIVE UP

Dwija P. Solanki
Class: 2-C

**Write a diary entry about cricket match.**

29th June 2024
Saturday

Dear diary,

It was 8 days since summer vacation was over. It was an important day for me in fact for the whole country . Today, the most anticipated cricket match was going to be held at Barbados, West indies . The match was between team India and South Africa, the grand finale of T20 world cup. I woke up got refreshed and went to school. I enjoyed the hours at the school with my friends and learned many new things . I came home , completed the lunch.

The coin was tossed and it was team India batting first . After 2013,India had never won an ICC event . Last year , in ODI world cup final we lost to Australia even though we were the dominant team . Now , this was the only chance to stop the wait of 11 years . India batted first and put on a decent score on the board . It was time for South Africa to chase the target . Match was going very intense, ball by ball the pressure was increasing . At a point it seemed that South Africa would win this match but our players kept the hope alive . At last India won the title. Tears flowing down everyone's eyes . This day changed the history of Indian cricket . After 11 years the wait was over and the cup was back home . I was very happy and exclaimed with joy . Every Indian would have had a very peaceful sleep that night.

S M Naveen

# Nectar Of Freedom

One day, a child , Mohan , and his grandfather were going from Chandrapur village to Rampur. There was a big stone on the road. Many people were injured with that but no one cared to remove the stone. The child, Mohan, saw this and told his grandfather about it. They stopped there.

Grandfather said to him,"What will you do if you want to help others?".

"I don't know," said Mohan.

Grandfather said to his grandchild, "Do you know your country, India, was in the hands of foreigners?"

The child replied, " Yes. Grandfather. Our teacher taught us that the British ruled us for nearly 200 years. Some are freedom fighters like Gandhiji and Subhash Chandra Bose etc. India became free on 15 August 1947. My teacher told me that America became free in July 1776."

Grandfather said, "But my child, you spoke about known people. There are unknown people and volunteers who participated in the freedom struggle. They fought for many years. They were defeated many times. They did not lose their heart. On 15 Aug 1947 India became free from foreigners. Freedom is nectar on earth. We have completed 75 years. So we can breathe in a new and free India. The work may be big or small. One should be ready to do that. No one knows what will happen next. It is better to solve the problems in your way. Problems are a part and parcel of life. One must accept that and live a happy life.

Now help me so we can remove the big stone. Others will not face the problem."

" Grandfather, you gave me knowledge," said Mohan.

Both tried to remove it and happily went to their destination.

Written by

Vidhee Prajapati, IX B

# THE WAY BACK HOME

I took a long sigh as I looked out of the window of the train. It had been ages since I had visited my hometown, the place I was born, the place I grew up, the place I called home. Thinking about my home made my mind refreshed. As I thought about it my eyes filled my longing. I had to leave my village at an early age as I did not come from a well do family.

As I looked out of the window, I saw a small muddy pond which reminded me of large pond near our home, where I used to jump into every now and then and the old woman sitting near it, catching and selling fish, would always shout at me for driving off the fishes with a splash. The huge building which came on the way reminded me of the humongous tree in our village on which my friend and I would climb on and throw half eaten fruits on our siblings. Thinking out the place I did not even realise when I reached my village. When I reached home, my bag fell off my hands and eyes teared up. Earlier I was so scared that everything must have been changed, but I was wrong. Everything was there as it earlier was. My emotions were overflowing and I was overwhelmed. The pond, the tree, our big house, the people everything was still the same. This gave me a feeling of happiness and bliss. I wished that I could live there for my whole life and realised that there is no place like home....

**ANUSHREE DEY**

**IX-C**

# Travelling the Scenic View of Darjeeling

It was the month of May. The temperature was at its peak. To get rid of the extreme weather , my parents decided to visit Darjeeling . We went to Siliguri by a train. From there we went to the Darjeeling Hill Station by a toy train . We booked a room in the hotel 'R J Resorts'. Next morning we hightailed to Sumendu Lake and Victoria Falls. It was a picturesque location. I took my camera with me for snapping unlimited photos. The beauty of nature is simply mesmerising. Darjeeling is fairly called 'The Queen of Hills'. Darjeeling is also known for its tea gardens. However we couldn't visit any tea gardens. We went to Mahakal Temple and offered religious items to the deity. I spotted monkeys at temple's gateway, they were running haphazardly. I kept a banana near one of them. All the monkeys began to gather near that banana. We left the humorous site. We stayed at Darjeeling for a week. The Scenic view of Darjeeling was still fresh in my mind.

**Simran Parida**

**10th A**

# Universe

As we know the human brain is the most complicated thing. The brain is almost impossible to understand properly . There is one more thing that can't be explored or understood properly , that is the Universe.

The Information that we know about it , is only one percent(1%) of the whole. That one percent is our "known Universe" . Universe is full of dark matter , it is an endless place. There is no starting and no ending point.

All of us know that we live in the Universe but there are many other things like a billion-trillion stars , black holes , gases , galaxies , planet systems , planets , nebulae , white holes and many other unknown objects. We are living on Earth which is in the Solar System located in the Milky way Galaxy. In our Solar System , there are 8 planets and a Sun (star). Earth is the only planet in our Solar System on which life is possible.

Have you ever thought why the Universe is dark and black even though there are many bright stars? It is just because of reflection when any light is produced it needs any other surface to reflect itself and then it can be seen. In the Universe, there is no end point , light just travels further and further. It doesn't reflect anywhere and due to this our mysterious Universe is dark and black..

**Vedangi Bhatt**

**Class 9th-C**

# Summer

Summer - You say summer
What do you do for summer?

The earth has to be saved,
Lots of trees have to be planted.

Artificial rain should not be created,
Arab countries should not be created.

Don't want to run AC.
The earth has to be saved.

Trees reduce heat and make the weather pleasant.
Trees have to be planted in every season,
Greenery summer has to be brought to the earth.

JYOTIRADITYA DEBNATH
CLASS-II B

# Amrita Sher-Gil :

Early Life and Education

Amrita Sher-Gil was bom on January 30, 1913, in Budapest, Hungary, to Sardar Umrao Singh Sher-Gil, a Sikh, and Marie Antoinette, a Hungarian. Her eclectically varied background and upbringing played an important role in her artistic vision. In 1921, the Sher-Gil family moved to India and settled in Shimla, where Amrita started discovering her artistic talents.

Sher-Gil began her education in art early. Her remarkable aptitude in painting took her to the prestigious École des Beaux-Arts in Paris between 1929 and 1933. There, she was exposed to European artistic movements, notably the works of Post- Impressionism and Cubism, which would later find representation in her work.

Artistic Career and Style

The retum of Amrita Sher-Gil to India marked the beginning of a metamorphic period in her career. She wanted to merge Westem artistic styles with the rich traditions and themes of Indian culture. Her work is succinctly described by vivid color, expressive brushwork, and deep empathy for its subjects.

Much of Sher-Gil's work symbolized women in Indian society and their struggles, along with the element of strength and survival in them. Her early works, such as "Young Girls" and "The Bride's Toilet." represented her great observation of the Indian way of life, as well as the fusion of Western and Indian styles. Among her major works is the "Three Girls," which is a powerful portrait in rural India. It documents how she managed to capture, with sensitivity and strength, the soul of her subjects.

Impact and Legacy

The contributions of Amrita Sher-Gil to modem Indian art are very deep. She is often described as the most important Indian artist of the 20th century because she created a bridge between the traditional Indian style of painting and the radical modern Western ones. She has secured a definite place in the history of art through her innovations and commitment to depicting the Indian themes and experiences. Though short-lived, the career of Sher-Gil was always an enunciation of the profound stir she was to create within the Indian art scenario. She died on December 5, 1941, at the very early age of 28 years. Her work inspires and reaches out to people, even long after she is gone. Her paintings display emotional depth and technical skill; she stands as an icon of artistic excellence and cultural synthesis.

Legacy and Commemoration

Her works grace several exhibitions and collections as a mark of the contribution that Amrita Sher-Gil made. Quite a number of retrospectives and scholarly studies on her life and art have established her undoubtedly as one of the leading pioneers of modern Indian art.

Sher-Gil's legacy is not confined to the frames of her paintings, but it is an embodiment of a female artist who broke all the conventional boundaries in order to forge a new path. The fact that these diverse influences could be finally merged together with her deep commitment to the expression of the human condition has continued to leave its mark on generations of artists and art lovers across the world.

Nency Rathod
Class:-XI B

O Goddess Saraswati,
Give me power and good knowledge.
Lead me to the right path of learning,
Keep me away from evil things,
Help me to please you throughout my life.
O Lord Buddha,O Lord Shiva, O Lord Vishnu,
Bless me with knowledge and understanding.
Bless my parents, brother, and sister,
And all my well-wishers.
Thank you, God.
Thank you, parents.
Thank you, teachers.

**Aashi Patel, VIII B**

Thank you, teachers.
May my friendships always be
The most important thing to me.
With special friends, I feel I'm blessed,
So let me give my very best.
I want to do much more than share
The hopes and plans a friend can dare.
I'll try all that a friend can do,
To make their wishes come true.
Let's use my heart to see,
To realize what friends can be,
And make no judgments from afar,
But love my friends the way they are.

**Dhairya Modi, VIII B**

# PLASTIC SHOULD BE BANNED

Plastic has become a part of modern life, but its impact on environment is very devastating. The worldwide use of plastic especially single use plastic items like water bottles, straws, cups, bags has led the world to a global environmental crisis. Plastic is non-biodegradable, meaning it does not break down naturally, and can stay in the same form for hundreds and thousands of years. This leads to severe pollution, especially in oceans it can be a big threat to marine life. Animals often understand the debris, plastic or toxic material as food and they eat it. Which can lead to indigestion, which can be fatal. Additionally the production of plastic is a significant contributor to greenhouse gases emission, exacerbating climate change.

The ban of plastic is very necessary TO SAVE THE WORLD and environment from harm. By eliminating plastic, we can reduce the amount of plastic waste that ends up in the sea shores, lakes, ponds, rivers, land etc. Furthermore, banning plastic would encourage the use of right and sustainable alternatives, such as biodegradable-materials which have lower effect or footprint on the environment. The move towards banning plastic also promotes a shift in consumer behavior, encouraging people to adopt re-usable items and it can help to reduce items and reduce overall waste. While a ban on plastic may pose challenges, particularly for industries that relays on plastic packaging like food packaging, water bottle making company and many more but we can make a huge difference like the long-time environmental benefits far outweigh the short-term inconvenience.

THE FUTURE OF OUR PLANET DEPENDS ON THE ACTION WE TAKE TODAY. BANNING PLASTIC IS A CRUCIAL STEP TOWARDS ENSURING A HEALTHIER, MORE SUBSTAINABLE WORLD FOR FUTURE GENERATIONS. THE TIME TO ACT IS NOW.

Vishwas Jadav
VII-A

# A LETTER FROM THE EVALUATOR

I am a teacher by heart. I want to open my heart as an evaluator what we see in the answer books. Here is a letter I want to post my dear students.

Evaluation Room
Evaluation center,
Earth
19/03/2022

Dear Students,

I am an evaluator. I am fine here. I hope you are fine there too. Today I have completed my work related to the evaluation and want to advise for the future.

The word 'examination' makes one fears for something unprecedented. But Practice makes man perfect. Writing is an art. One must know as a literate how to write. Children fear for the examination but they should not fear. Because what they practice whole year they should write in their answer books in exam. One should follow "CODER" for writing.

C means Collect your ideas.
O means Organize your ideas.
D means Draft your ideas properly.
E means Edit your written work carefully.
R means Revise the same.

Before starting the exam

Read the question paper properly. You should try to understand what the question wants. One should make the strategy for writing. One should follow easy to difficult method.

At the time of writing

1.Write as you understand the question. There is no meaning of rot learning.

2.Unnecessary capital and small letters must not be used. Example algu should be Algu. And the first-person singular pronoun "I" must be capital.

3.Punctuation marks must be used properly to give the clear meaning of what was written whenever needed.

4.Homophones and homonyms should be used properly to avoid the confusion and grammatical errors.

5. Question must be answered in the same tense if possible. While writing one must understand writing should be legible.

6. Informal short forms must not be used in formal writing. Notetaking is totally different.

7. Word limit should be followed if possible. One should not write for 2 marks one page and for 5 marks one page. It is not acceptable.

8. Repetition of sentences must be avoided because it gives negative impression in reader's mind.

I hope you will follow these suggestions and make your life filled with colours you like.

Your well-wisher,
Evaluator

Prakshkumar Prajapati
TGT-English

# SYNOPSIS OF ROOM ON THE BROOM

The concept of "women power" in society refers to the growing influence, leadership, and empowerment of women across various sectors, including politics, business, education, and social movements. Over the past century, women have made significant strides in gaining rights, achieving higher levels of education, and breaking into traditionally male-dominated fields.

This shift has had profound impacts on society:

Economic Contributions: Women have become key players in the workforce, contributing to economic growth and innovation. Their involvement in entrepreneurship, leadership roles, and STEM fields has diversified and strengthened economies worldwide.

Political Influence: Women are increasingly taking on leadership roles in government and politics. Their representation in legislative bodies and executive offices has led to more inclusive policies, focusing on issues such as healthcare, education, and family welfare.

Social Movements: Women have been at the forefront of many social justice movements, advocating for gender equality, reproductive rights, and against gender-based violence. Movements like #MeToo have brought global attention to issues of sexual harassment and assault.

Cultural Impact: The representation of women in media and culture has evolved, with more diverse and empowered female characters in film, literature, and art. This has helped challenge stereotypes and promote a more inclusive view of gender roles.

Challenges and Barriers: Despite these advances, women still face significant challenges, including wage gaps, underrepresentation in certain industries, and societal expectations around gender roles. Intersectional issues, such as race and class, further complicate the struggle for gender equality.

Overall, the increasing power and influence of women in society are reshaping cultural norms, economic structures, and political landscapes, contributing to a more equitable world. However, ongoing efforts are needed to address persistent inequalities and ensure that all women, regardless of background, have the opportunity to thrive.

GARIMA BIYANI
PGT-English

# सर्वत्र संस्कृतम्

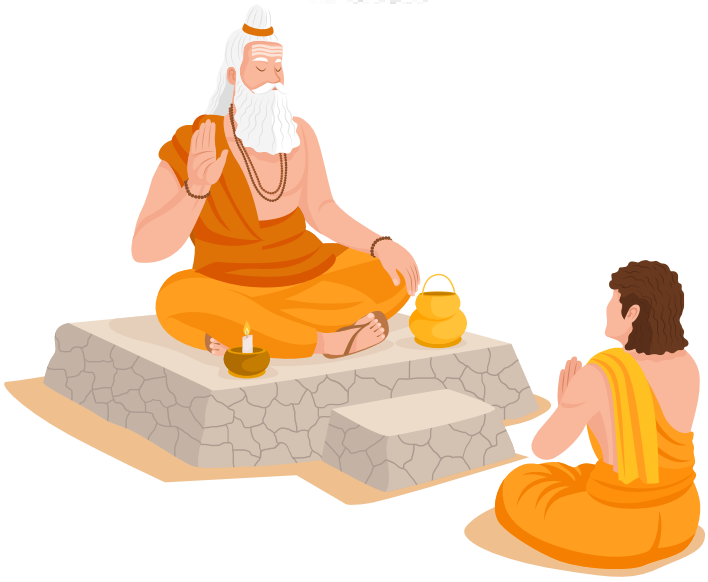

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO.1, GANDHINAGAR

## संस्कृते अभियांत्रिकी

**अर्णवपोतः (SHIPS/जहाज़)**

**न सिन्धु गाद्यार्हति लोहबन्धनं**

**तल्लोहकान्तैः हियते हि लोहम्।**

**विपद्यन्ते तेन जलेषु नौकाः**

**गुणेन बन्धं निजगाद भोजः ।। (युक्तिकल्पतरु, श्लोक 88)**

**Meaning:-**Bhojasays that iron should not be used to join the planks in the lower part of the ship. By doing so, the ship comes under the influence of magnetic rocks in the sea and comes into the magnetic field, due to which it sinks. The ocean gave way to the ancient engineers of India! Our excellence was in the shape of the ship long ago!

**अर्थ:-**भोज कहते हैं कि जहाज़ के निचले हिस्से में तख्तों को जोड़ने में लोहे का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा करने से जहाज़ समुद्र में चुंबकीय चट्टानों के प्रभाव में आ जाता है और चुंबकीय क्षेत्र में आ जाता है, जिससे वह डूब जाता है।भारत के प्राचीन इंजीनियरों को महासागर ने रास्ता दे दिया! हमारी उत्कृष्टता बहुत पहले से ही जहाज़ के आकार की थी!

## संस्कृतेगणितम्

**वर्गमूलानि घनमूलानि च (SQUARE AND CUBE ROOTS/वर्गमूलऔरघनमूल)**

**भागं हरेदवर्गान्नित्यं द्विगुणेन वर्गमुलेन ।**
**वर्गाद्वर्गे शुद्धे लब्धं स्थानान्तरे मुलम् ।। (आर्यभटीयां) (476 AD)**

**Meaning :-** One should divide the non-square place by twice the square root of the square place, then subtract the square from the next square place.

**अर्थ:-**गैर-वर्गाकार स्थान को वर्गाकार स्थान के वर्गमूल के दोगुने से भाग देना चाहिए, फिर अगले वर्गाकार स्थान से वर्ग घटा देना चाहिए।

यूसुफ खान
कक्षा – दशमी –ब

# संस्कृते खगोलशास्त्रम्

## सौरोर्जा (SOLAR ENERGY/सौर ऊर्जा)

**येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः ।**

**ततः क्षत्रं बलमोजश्च जातम् ।।(तैत्तिरीय आरण्यकम्-3.11)**

**Meaning:-**The world is due to the Sun god. The living beings get their strength and energy from Him.

**अर्थः-**सूर्यदेव से ही संसार है। प्राणियों को शक्ति और ऊर्जा उन्हीं से मिलती है।

# संस्कृतेरसायनशास्त्रम्

## क्षयकरणम् (CORROSION/संक्षारण)

**सुवर्ण रजतं ताम्र**

**तीक्ष्णं वङ्ग भुजङ्गमम् ।**

**लोहन्तु षड्विधं तच्च**

**यथापूर्वं तदक्षयम् ।।(रसार्णवम्, 7.96)**

**Meaning :-**Gold, Silver, Copper, Iron, Lead, Zinc are the 6 types of metals, their stability (resistance towards corrosion / reactivity) is in the reverse order of the above.

**अर्थः-**सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, सीसा, जस्ता ये 6 प्रकार की धातुएँ हैं, इनका स्थायित्व (संक्षारण/क्रियाशीलता के प्रति प्रतिरोध) उपरोक्त के विपरीत क्रम में होता है।

**ऋषित प्रियदर्शी**
**दशमी –ब**

# ॥वैवश्यम् चौर्यकारणम्॥

॥ जन्मना कोऽपि चौरो न , वैवश्यं चौर्य – कारणम् ।
समाजात् सर्वकारच्चा , वैवश्यं तत् प्रजायते ॥

सः विकार्यता ग्रस्त आसीत्।कार्यं प्राप्तुं तेन बहु प्रयासाः कृताः।किन्तु सफलता न कुत्र अपि मिलिता।अन्ते बुभुक्ष्या म्रियमणेन तेन कस्यचित् गृहस्थस्य गृहात् रोटिकां चोरयित्वा क्षुधाशान्तिः कृता।चौर्यापराधे निगृहिताय तस्मै न्यायाधिशः दण्डम् सर्वेभ्यः जनेभ्यः शत– शत् रुण्यकाणां राशिना दण्डं दत्तवान्।जनैः पृष्टः च सः एवम् उत्तरम् अददात्

“ समाजस्य एका व्यक्तिः विकर्यता-ग्रस्ता तिष्ठेत्।यदा समाजः अपराधी भवति। अहम् अपि तेषु अपराधिषु एकः अस्मि।अतः अहम् अपि आत्मानं दण्डितवान् पर रोटिका चौरः दण्ड-राशिं कुतः भरिष्यति? तस्य समीपे यदि इयन्ति एव रुपयकाणि अभविष्यन्, तर्हि सः चौर्यम् एव किम् अकरिष्यत्? अतः सः क्षम्यते । नही कश्चित जन्मना चौर भवति। जनतान्त्रिकः सर्वकारः अपि इह स्वल्पदोषी न अस्ति । सः आत्मनः रीति – नीति सुधारयतु अन्यथा बुभुक्षितः किं न करोति पापम?”

तत्र उपस्थिताः सर्वे अपि न्याय श्रोतारः अनेन न्यायेन लज्जिताः इव सन्तः स्वं स्वं दण्ड राशिं तत्कालम् एव दत्तवा न्यायालयस्य गरिमाणं रक्षितवन्तः इति।

राशि राठोड
कक्षा -८ ‘स’

# संस्कृत-वैशिष्ट्यम्

श्लोकःभारतीयमहाकाव्यस्यआधारःअस्ति,
शास्त्रीयसंस्कृतकाव्येअन्येभ्यःमीटरेभ्यःअपेक्षयादूरतरंयथाभवतितथाभवतितथाचभारतीयपद्यरूपंउत्कृष्ट तयागणयितुंशक्यते।[2] श्लोकःमहाभारते, रामायणे, पुराणेषु, स्मृतिषु, हिन्दुधर्मस्यसुश्रुतसंहिता, चरकसंहिताइत्यादिषुवैज्ञानिकग्रन्थेषुचसामान्यतयाप्रयुक्तःपद्यरूपःअस्ति।महाभारते यथा, तस्य अध्यायेषु अनेकाः छन्दमीटर्-मात्राः दृश्यन्ते, परन्तु ९५% छन्दाः अनुष्टुभ-प्रकारस्य श्लोकाः, शेषाः अधिकांशः त्रिष्टुभः।अधः केचन अतीव प्रेरणादायकाः श्लोकाः दत्ताः सन्ति :-

**प्रातारत्नंप्रातरित्वादधाति।**

**English Translation:** An early riser earns good health.

**Hindi Translation:** प्रातःकालउठनेवालेअच्छास्वास्थ्यप्राप्तकरतेंहै।

**अमृतत्वस्यतुनाशास्तिवित्तेन।**

**English translation :** Immortality cannot be achieved by wealth.

**Hindi translation :** धनसेअमरत्वप्राप्तनहींकियाजासकता।

**विवेकख्यातिरविप्लवाहानोपायः।**

**English Translation:**

Uninterrupted practice of discrimination (between real and unreal)is the means to liberation and the cessation of ignorance.

**Hindi Translation:**

निरंतरअभ्याससेप्राप्तनिश्चलऔरनिर्दोषविवेकज्ञानहान(अज्ञानता) काउपायहै।

**आनोभद्राःक्रतवोयन्तुविश्वतः।**

**English Translation:**

Let noble thoughts come to me from all directions.

**Hindi Translation:**

सभीदिशाओंसेनेकविचारमेरीओरआएँ।

*-ऋति आर नायर*
*नवमी '*

# अखण्ड-भारतम्

अखण्ड्-भारत् अथवा अखण्ड्-हिन्दुस्तान् इतीदं संयुक्त-बृहत्तर-भारतस्य परिकल्पना अस्ति।

## इतिहासः

भारतीयस्वतन्त्रता-आन्दोलनस्य समये कन्हैयालाल्-माणिकलाल्-मुन्शी-वर्यः एकीकृतभारतस्य आह्वानम् अकरोत्, यस्य समर्थनं महात्मागान्धी-वर्यः कृतवान्, तथा च मन्यत् यत् ब्रिटन्-देशः विभाजनं शासनं च नीत्या स्वसाम्राज्यं धारयितुं प्रयतमानः अस्ति, यावत् ब्रिटिश्-जनाः तिष्ठन्ति तावत् यावत् हिन्दु-मुस्लिम्-ऐक्यं न शक्यते इति।

- संयुक्तभारते 8 देशाः आसन्। अफ्गानिस्तान्, बाङ्ग्लादेश्, भूटान्, भारतं, माल्दीव्स्, म्यान्मार्, नेपाल्, पाकिस्तान्, श्रीलङ्का, टिबॅट्, चीनदेशस्य च केषाञ्चन भागाः सन्ति।
- अखण्ड्-भारतम्, अखण्ड्-हिन्दुस्तान् इति नाम्ना अपि ज्ञायते, एतत् पदं "अविभक्तभारतं" इति अर्थः अस्ति।एतत् विभाजनात् पूर्वं भारतस्य ऐतिहासिकसीमायां कल्पयति।

भारतस्य बहवः प्राचीनाः स्मारकाः यूनेस्को-संस्थया विश्वपरम्परास्थलत्वेन निर्दिष्टानि सन्ति, येन तेषां वैश्विक-मान्यतां महत्त्वं च वर्धते। एतेषु ताजमहल्, रक्तदुर्गः, कुतुब्-मिनार्, अजन्ता-एलोरा-गुहाः, हम्पी, खजुराहो-मन्दिरं, कोनार्क्-सूर्यमन्दिरं, फ़तेह्पुर्-सिक्री इत्यादयः प्रतिष्ठिताः स्मारकाः सन्ति।

अधुना भारते 38 विश्व-परम्परा-स्थलानि सन्ति, येषु 30 सांस्कृतिक-स्थलानि, 7 प्राकृतिक-स्थलानि, 1 मिश्र-स्थलम् च सन्ति।

**विधि रसानिया**

**नवमी 'स'**

# आत्मैकता –विचाराः

**उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।**

**आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥**

**हिन्दी अनुवादः-** अपने मन की शक्ति द्वारा स्वयं को ऊपर उठाएँ, न कि स्वयं को नीचा दिखाएँ, क्योंकि मन स्वयं का मित्र भी हो सकता है और शत्रु भी।

**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।**
**न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥**

**हिन्दी अनुवादः** आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता, और वायु सुखा नहीं सकती।

**समबुद्धियुक्त बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।**

**तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्॥**

**हिन्दी अनुवादः -** मनुष्य इस जीवन में ही शुभ और अशुभ प्रतिक्रियाओं से छुटकारा पा लेता है। इसलिए तू समत्वरूप योग में लग जा। यह योग ही कर्मों में कुशलता है।

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**

**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥**

**हिन्दी अनुवादः -** जब जब धर्म का पतन और अधर्म का वृद्धि होती है, हे अर्जुन, तब मैं अवतारित होता हूँ।

**अनुश्री डे**
**नवमी स**

# संस्कृते खगोलशास्त्रम्

## सौरोर्जा (SOLAR ENERGY/सौर ऊर्जा)

येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः ।

तत: क्षत्रं बलमोजश्च जातम् ।।(तैत्तिरीय आरण्यकम्-३.11)

Meaning:-The world is due to the Sun god. The living beings get their strength and energy from Him.

अर्थ:-सूर्यदेव से ही संसार है। प्राणियों को शक्ति और ऊर्जा उन्हीं से मिलती है।

# संस्कृतेरसायनशास्त्रम्

## क्षयकरणम् (CORROSION/संक्षारण)

सुवर्णं रजतं ताम्र

तीक्ष्णं वङ्ग भुजङ्गमम् ।

लोहन्तु षड्विधं तच्च

यथापूर्वं तदक्षयम् ।।(रसार्णवम्, 7.96)

Meaning :-Gold, Silver, Copper, Iron, Lead, Zinc are the 6 types of metals, their stability (resistance towards corrosion / reactivity) is in the reverse order of the above.

अर्थ:-सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, सीसा, जस्ता ये ६ प्रकार की धातुएँ हैं, इनका स्थायित्व (संक्षारण/क्रियाशीलता के प्रति प्रतिरोध) उपरोक्त के विपरीत क्रम में होता है।

कथित प्रियदर्शी
कक्षा –द्वादशी –ब

# "वर्णोच्चारण की सम्यग् रीति"

एवं वर्णाः प्रयोक्तव्याः नाव्यक्ता न च पीडिताः |
सम्यग् वर्णप्रयोगेण ब्रह्मलोके महीयते ||

**भावार्थ** – वर्णों का प्रयोग सम्यक् रीति से करना चाहिए,वर्णों का उच्चारण अव्यक्त नहीं होना चाहिए | क्योंकि उनका श्रवण ठीक से नहीं हो सकेगा | न वे पीड़ित हो क्योंकि वर्ण वैरस्य हो जाएँगे | इस प्रकार वर्णों के सम्यक प्रयोग से उच्चारण करने वाला ब्रह्मलोक (कार्य ब्रह्मलोक /शिक्षा ) में पूजित होता है |

**व्याख्या** –

- ✓ वर्णों का सम्यक् रीति से उच्चारण करने से ही भाषा की सुन्दरता स्पष्ट होती है |
- ✓ **'शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति' (फ़लश्रुति)**
- ➢ शब्दब्रह्म में निष्णात व्यक्ति परब्रह्म को प्राप्त करता है |
- ✓ **'एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति | (महाभाष्य )**
- ➢ एक भी शब्द यदि सम्यक रीति से ज्ञात हो तथा उसका सही प्रयोग किया हो तो वह इस लोक में और स्वर्ग में कामधेनु के सामान होता है |

**भगवान् पाणिनि लिखित पाणिनीय शिक्षा में अधम और उत्तम पाठक के छह-छह लक्षण बताएँ हैं –**

"अधम पाठकों के छह लक्षण"
गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखितपाठकः |
अनर्थज्ञोऽल्पकंठश्च षडेते पाठकाधमाः ||

1. **गीती** - जो गाते हुए पढ़ता है | ऐसा व्यक्ति यथावत् पाठ करने में समर्थ न होने पर भी गाने के द्वारा उस क्षति को पूरा करना चाहता है |
2. **शीघ्री** - शीघ्र पाठ करने वाला शीघ्री | जो शीघ्रता में वर्णों को चबाता हुआ-सा पढ़ता है |
3. **शिरः कम्पी** – सिर को हिलाकर पाठ करने वाला शिरः कम्पी |
4. **तथालिखितपाठकः** - जो पाठ करना नहीं जानता तथापि जैसा लिखा है उसे ,उसी प्रकार पढ़ने का प्रयास करता है |
5. **अनर्थज्ञ** - अर्थ को न जानने वाला | अर्थ को न जानने वाला पदों की संक्रान्ति अर्थात् विराम –पदच्छेद नहीं कर पाता है |
6. **अल्पकण्ठः** - जिसका वाग्यंत्र संकुचित हो | ऐसे व्यक्ति द्वारा उच्चारण करने पर संकुचन से श्रोता को सही से श्रवण नहीं जिससे श्रोता को कष्ट पहुँचता है |

**"उत्तम पाठक के छह गुण"**

**माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः |**
**धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठकाः गुणाः ||**

**भावार्थ –**

1. **माधुर्यम्** – वर्णों का भलीभाँति सुनाई देना और कानों के लिए सुखद होना माधुर्य है |
2. **अक्षरव्यक्तिः** - वर्णों का श्रुतिसुखद होने के साथ स्पष्ट श्रवण भी आवश्यक है यही 'अक्षरव्यक्ति' है |
3. **पदच्छेद** – पदों के उच्चारण में उचित स्थान पर यति और अर्थ के अनुसार विराम ही पदच्छेद है |
4. **सुस्वर** – सुस्वर वह कंठस्वर है जो अनुनाद (गूँज) के साथ सौष्ठव युक्त है |
5. **धैर्य** - धैर्य से आशय है कि पाठक के पाठ में शीघ्रता प्रतीत न हो और पाठ्यवस्तु में वक्ता का अधिकार हो ऐसा ज्ञात होता हो |
6. **लयसमर्थ** - जो पाठ धैर्ययुक्त हो वह लयसमर्थ होना चाहिए | एक लय से दूसरे लय में पहुँचकर उच्चारण करने में गति अवरुद्ध नहीं होनी चाहिए |

-इति-

**सुरभारतीसमुपासकः**
**अभिषेक जोशी**
**प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक –संस्कृत**
**के.वि.१, सेक्टर ३० ,गाँधीनगर**

CCA ACTIVITIES

Blindfold Activity